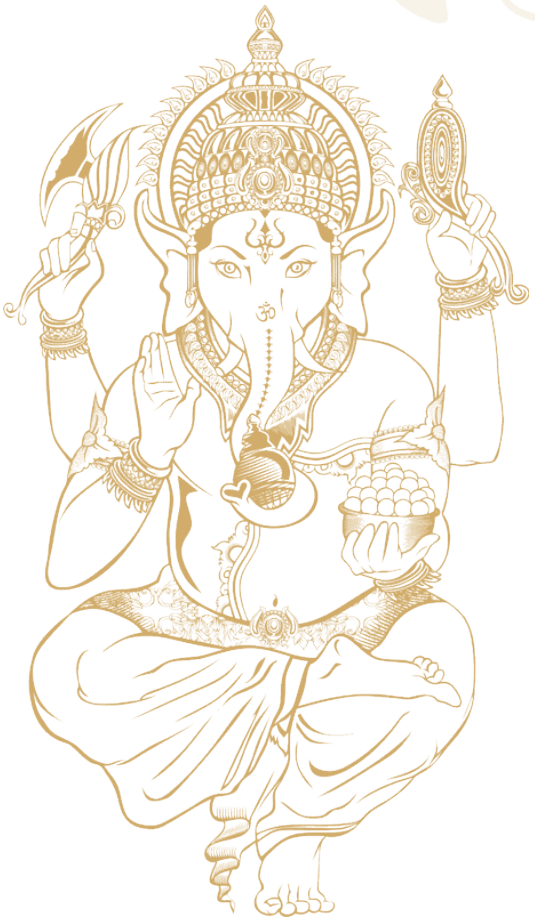

nishant

himakshi

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121745201

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121745201 Date: 29/03/2026

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
25-26/11/2000	जन्म तिथि	1-02/01/2002
शनि-रविवार	दिन	मंगल-बुधवार
घंटे 06:00:00	जन्म समय	06:20:00 घंटे
घटी 57:29:18	जन्म समय(घटी)	57:25:52 घटी
India	देश	India
Sojat Road	स्थान	Sojat Road
25:48:00 उत्तर	अक्षांश	25:48:00 उत्तर
73:49:00 पूर्व	रेखांश	73:49:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:34:44	स्थानिक संस्कार	-00:34:44 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
07:00:16	सूर्योदय	07:21:39
17:43:20	सूर्यास्त	17:54:58
23:51:53	चित्रपक्षीय अयनांश	23:52:50

तुला	लग्न	धनु
शुक्र	लग्न लग्नाधिपति	गुरु
वृश्चिक	राशि	कर्क
मंगल	राशि-स्वामी	चन्द्र
अनुराधा	नक्षत्र	आश्लेषा
शनि	नक्षत्र स्वामी	बुध
3	चरण	2
सुकर्मा	योग	विष्कुम्भ
किंस्तुघ्न	करण	विष्टि
नू-नूर	जन्म नामाक्षर	डू-डूंगरी
धनु	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मकर
विप्र	वर्ण	विप्र
कीटक	वश्य	जलचर
मृग	योनि	मार्जार
देव	गण	राक्षस
मध्य	नाड़ी	अन्त्य
सर्प	वर्ग	श्वान

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शनि 8वर्ष 4मा 0दि		26:13:56	तुला	लग्न	धनु	02:12:50	बुध 9वर्ष 9मा 25दि	
केतु		10:11:19	वृश्चि	सूर्य	धनु	17:33:27	शुक्र	
28/03/2026		10:49:03	वृश्चि	चंद्र	कर्क	22:17:50	29/10/2018	
28/03/2033		19:34:15	कन्या	मंगल	कुंभ	23:45:30	29/10/2038	
केतु	24/08/2026	24:14:10	तुला	बुध	मक	03:17:50	शुक्र	27/02/2022
शुक्र	25/10/2027	12:34:07	वृष व	गुरु व	मिथु	16:38:46	सूर्य	27/02/2023
सूर्य	29/02/2028	21:34:29	धनु	शुक्र	धनु	14:34:58	चन्द्र	28/10/2024
चन्द्र	29/09/2028	03:05:53	वृष व	शनि व	वृष	15:22:41	मंगल	28/12/2025
मंगल	26/02/2029	22:14:06	मिथु व	राहु व	मिथु	03:15:27	राहु	28/12/2028
राहु	16/03/2030	22:14:06	धनु व	केतु व	धनु	03:15:27	गुरु	29/08/2031
गुरु	20/02/2031	23:25:17	मक	हर्ष	मक	28:37:34	शनि	29/10/2034
शनि	31/03/2032	10:24:02	मक	नेप	मक	13:36:00	बुध	28/08/2037
बुध	28/03/2033	18:32:24	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	22:11:36	केतु	29/10/2038

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:51:53 चित्रपक्षीय अयनांश 23:52:50

लग्न-चलित

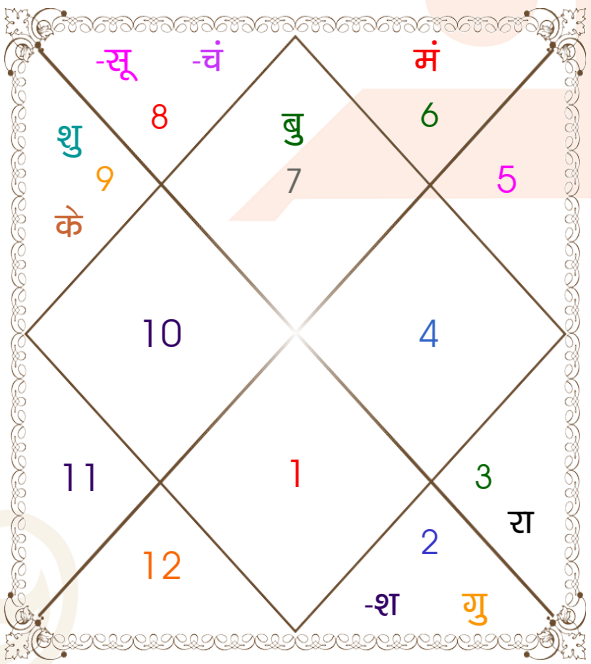

लग्न-चलित

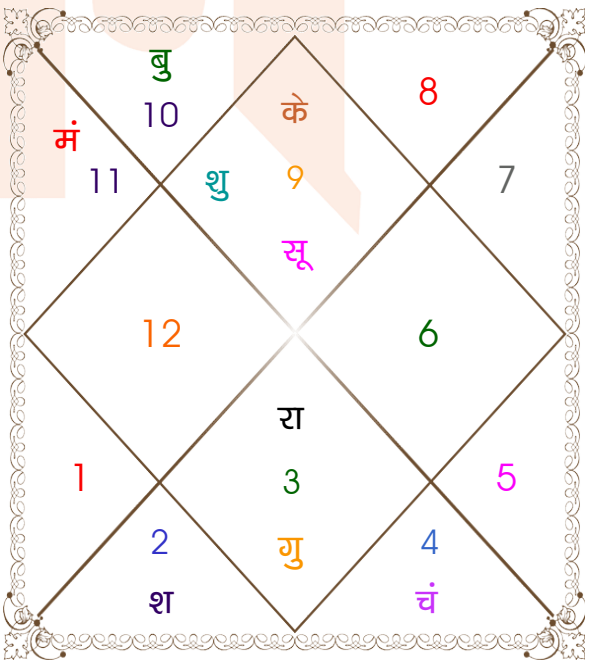

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	विप्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	कीटक	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	अतिमित्र	सम्पत	3	3.00	--	भाग्य
योनि	मृग	मार्जार	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	चन्द्र	5	4.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	राक्षस	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृश्चिक	कर्क	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	20.00		

कुल : **20 / 36**

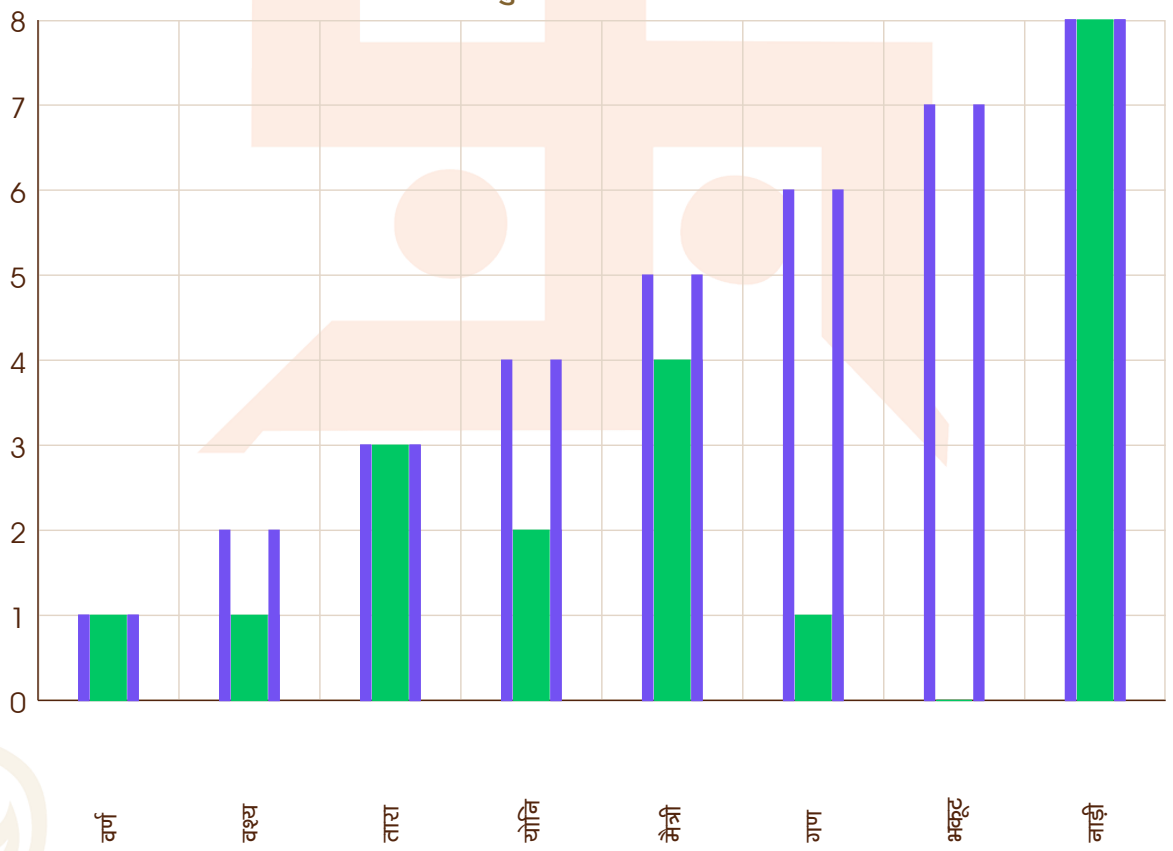

अष्टकूट मिलान

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

दर्पोंदज का वर्ग सर्प है तथा himakshi का वर्ग श्वान है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार दर्पोंदज और himakshi का मिलान औसत है।

मंगलीक दोष मिलान

दर्पोंदज मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल दर्पोंदज कि कुण्डली में द्वादश भाव में कन्या राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

himakshi मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि himakshi कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

दर्पोंदज तथा himakshi में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

दर्पीदज का वर्ण ब्राह्मण तथा himakshi का वर्ण भी ब्राह्मण है अतः यह मिलान अति उत्तम है। जिसके कारण दोनों के गुण, स्वभाव, आदतें, पसन्द एवं नापसंद सभी एक-समान होंगी। दोनों एक-दूसरे के बिल्कुल अनुरूप एवं अनुकूल साबित होंगे तथा दोनों हमेशा सामाजिक, व्यावसायिक एवं पारिवारिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन में एक-दूसरे की सहायता करेंगे।

वश्य

दर्पीदज का वश्य कीट है एवं himakshi का वश्य जलचर है। जिसके कारण यह मिलान औसत मिलान है। जलचर एवं कीट आपस में न तो मित्र होते हैं और न ही शत्रु। अतः कीट दर्पीदज एवं जलचर himakshi के बीच वैवाहिक संबंध उदासीनता तथा प्रेम एवं सौहार्द का अभाव बना रहेगा। जिसके कारण इनका जीवन नीरस हो सकता है। अधिकांश समय दोनों समझौता करके तालमेल बनाने में व्यतीत करेंगे किंतु डंक मारना कीट का नैसर्गिक स्वभाव होता है अतः दर्पीदज यदा-कदा अस्वाभाविक व्यवहार कर सकता है जिससे himakshi शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक रूप से आहत हो सकती है।

तारा

दर्पीदज की तारा अतिमित्र तथा himakshi की तारा सम्पत है। अतः दोनों की तारा अनुकूल होने के कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। यह विवाह वैवाहिक जीवन एवं परिवार के लिए चहुंमुखी समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। साथ ही दोनों एक-दूसरे के लिए काफी भाग्यशाली साबित होंगे। दर्पीदज हमेशा himakshi के साथ मित्रवत व्यवहार करता रहेगा तथा उसे असीम प्रेम एवं प्यार देता रहेगा। इनके बच्चे भी काफी बुद्धिमान, भाग्यशाली, आज्ञाकारी एवं सफल होंगे।

योनि

दर्पीदज की योनि मृग है तथा himakshi की योनि मार्जार है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं हैं और इनके बीच उदासीनता का अर्थात सम संबंध है। अतः यह मिलान औसत मिलान कहलायेगा। जिसके कारण दोनों के बीच आपसी समझबूझ का अभाव रहेगा तथा जीवन में सहयोग की भावना एवं प्रेम का अभाव भी बना रहेगा। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई झगड़े होंगे तथा परिवार में तनाव तथा अशांति का भाव भी रह सकता है। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी बनी रहेगी। दोनों एक दूसरे को संदेह की भावना से देखेंगे जिससे दोनों के बीच कटुता का भाव भी पैदा होगा। दोनों के बीच आपसी समझ की कमी भी रहेगी अतः दोनों के बीच वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं। संभव है कि दोनों के बीच अवैध संबंध को लेकर संदेह की भावना बन जाये जिसके कारण पारिवारिक तनाव भी हो सकता है। बात-बात में दोनों के बीच में कभी कभी तर्क-वितर्क की जगह कुतर्क भी हो सकता है। वर या कन्या में से

कोई भी विश्वासघात भी कर सकता है। जिसके कारण दोनों के बीच लड़ाई झगड़ा भी हो सकता है। इनको अपने जीवन में अत्याधिक संघर्ष के उपरांत ही सफलता प्राप्त होगी अतः कठिन परिश्रम की आवश्यकता पड़ेगी। इसके बावजूद इनको अपने जीवन में सफलता कम ही मिलेगी। अर्थात मेहनत अधिक और परिणाम कम ही मिलने की संभावना है। जिसके कारण दोनों को समय-समय पर मानसिक पीड़ा होती रहेगी। पारिवारिक आय औसत ही रहेगी। अर्थात धनागम के स्रोत कम ही रहेंगे। पति-पत्नी के बीच विचारों में भिन्नता होगी एवं जीवन में उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। दोनों लापरवाह प्रवृत्ति के होंगे किंतु परिवार के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहेंगे। दोनों के बीच रोमांस एवं सेक्स में रुचि की कमी भी रह सकती है। कई बार वाद-विवाद में तर्क-वितर्क होते रहेंगे। जिसके कारण समय-समय पर धन हानि भी हो सकती है। आपस में प्रेम एवं सौहार्द्र की भी कमी रहेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन बहुत अच्छा न रहकर निम्न सामान्य स्तर का ही होगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में दर्पीदज का राशि स्वामी himakshi के राशि स्वामी से मित्र का संबंध रखता है। जबकि himakshi का राशि स्वामी दर्पीदज के राशि स्वामी के साथ सम का संबंध रखता है। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि से यदि एक साथी के राशि स्वामी दूसरे साथी के लिए मित्र हो किंतु दूसरे साथी के राशि स्वामी अपने साथी के राशि स्वामी को सम मानते हों तो इसे भी उत्तम मिलान माना जाता है। ऐसी स्थिति में वैवाहिक सुख, शांति, खुशहाली, प्रेम एवं समृद्धि से युक्त जीवन होता है। अतः दम्पत्ति के बीच पारस्परिक समझ, विश्वास एवं सहयोग की भावना बनी रहेगी। दोनों अपने घरेलू अथवा सामाजिक दायित्वों का निर्वहन साथ मिलकर करते रहेंगे तथा सभी की प्रशंसा का पात्र बनेंगे।

गण

दर्पीदज का गण देव तथा himakshi का गण राक्षस है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। ऐसी परिस्थिति में himakshi निर्दयी, निष्ठुर एवं क्रूर स्वभाव की हो सकती हैं जो वर, उसके बच्चों तथा परिवार के सदस्यों के लिए बुरा एवं घातक साबित हो सकता है। ऐसी पत्नी से अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वह अपने पति, परिवार अथवा सामाजिक दायित्वों का अच्छी प्रकार से निर्वहन करेंगी। himakshi की अक्सर दूसरों से लड़ाई-झगड़ा करना एवं लोगों को उकसाना इसी प्रकार की आदत होगी।

भकूट

दर्पीदज से himakshi की राशि नवम भाव में स्थित है तथा himakshi से दर्पीदज की राशि पंचम भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। क्योंकि इसमें नवम-पंचम का वैधव्य दोष लग रहा है। जिसके कारण लड़ाई-झगड़े, मुकदमेबाजी, तलाक एवं अनहोनी घटनाएं घट सकती हैं। दर्पीदज की प्रवृत्ति लॉटरी, सट्टेबाजी, जुआ आदि में धन बर्बाद करने की हो सकती है। अपनी इन बुरी आदतों के कारण पति-पत्नी के बीच कोई प्रेम शेष नहीं

रह पाता। फिर भी यह विवाह स्वीकार्य है यदि दोनों के राशि स्वामी एक-दूसरे के मित्र हैं।

नाड़ी

दर्पीदज की नाड़ी मध्य है तथा himakshi की नाड़ी अन्त्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। यह जीवन के लिए आवश्यक दो महत्वपूर्ण अवयवों का समन्वय है। अच्छे स्वास्थ्य, स्वस्थ काया एवं अच्छे यौन जीवन के लिए वात, पित्त एवं कफ का शरीर में संतुलन आवश्यक है। जिसके कारण दर्पीदज एवं himakshi के बीच साहचर्य, सुख एवं समृद्धि की वृद्धि तथा उन्हें अच्छे, स्वस्थ एवं आज्ञाकारी संतान प्रदान होगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

दर्पीदज की जन्म राशि जलतत्व युक्त वृश्चिक तथा himakshi की राशि भी जलतत्व युक्त कर्क है। जलतत्व की परस्पर समानता होने के कारण दर्पीदज और himakshi की स्वभावगत विशेषताओं में समानता होगी फलतः दाम्पत्य संबंधों में मधुरता रहेगी तथा इनका वैवाहिक जीवन सुखी रहेगा।

दर्पीदज की जन्म राशि का स्वामी मंगल तथा himakshi की राशि का स्वामी चन्द्रमा परस्पर सम एवं मित्र राशियों में स्थित हैं। अतः सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए यह स्थिति उत्तम रहेगी। इसके प्रभाव से दर्पीदज और himakshi का आपस में प्रेम सहानुभूति तथा समर्पण का भाव होगा तथा सुख दुख में एक दूसरे को सहयोग प्रदान करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही एक दूसरे के गुणों की प्रशंसा करेंगे तथा कमियों की उपेक्षा करेंगे जिससे इनका वैवाहिक जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

दर्पीदज और himakshi की राशियां परस्पर नवम एवं पंचम भाव में पड़ती है शास्त्रानुसार यह भकूट दोष माना जाता है। इसके प्रभाव से उपरोक्त शुभ फलों में यदा कदा न्यूनता का भाव आएगा तथा आपस में मतभेद तथा विरोध के भाव में वृद्धि होगी। वे एक दूसरे के प्रति अंहकार एवं श्रेष्ठता की भावना भी रखेंगे। इससे संबंधों में तनाव तथा कटुता का भाव उत्पन्न होगा अतः सुखी दाम्पत्य जीवन व्यतीत करने के लिए दर्पीदज और himakshi को ऐसी प्रवृतियों की उपेक्षा करनी चाहिए।

दर्पीदज का वश्य कीट तथा himakshi का वश्य जलचर है। अतः नैसर्गिक रूप से इन दोनों के मध्य मित्रता तथा समता होने के कारण दर्पीदज और himakshi की अभिरूचियों में समानता रहेगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर आवश्यकताएं समान रहेगी। साथ ही दाम्पत्य संबधों में भी एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगे।

दर्पीदज और himakshi दोनों का वर्ण ब्राह्मण है अतः इनकी कार्य क्षमताएं समान होंगी तथा शैक्षणिक तथा धार्मिक कार्य कलापों में दोनों रूचिशील रहेंगे फलतः कार्य क्षेत्र में सुदृढ़ता बनी रहेगी।

धन

दर्पीदज की तारा अतिमित्र तथा himakshi की तारा सम्पत है। अतः इसके शुभ प्रभाव से इनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगे। साथ ही भकूट का प्रभाव भी सम होगा तथा कोई शुभ या अशुभ प्रभाव नहीं होगा। लेकिन मंगल का अशुभ प्रभाव दर्पीदज की आर्थिक स्थिति पर रहेगा परन्तु कुल स्थिति पर इसका कोई प्रभाव नहीं होगा तथा दर्पीदज और himakshi समृद्धि से युक्त होकर जीवन व्यतीत करने में समर्थ होंगे।

himakshi भाग्यशाली तथा धनाढ्य होंगी तथा दर्पीदज के शुभ प्रभाव से अपने धन एवं वैभव की अभिवृद्धि करने में समर्थ होंगी लेकिन मंगल के प्रभाव से दर्पीदज यदा कदा मुक्त हाथों से व्यय करेंगे। अतः दर्पीदज को अपनी ऐसी प्रवृति पर नियंत्रण रखना चाहिए।

स्वास्थ्य

दर्पीदज मध्य नाड़ी तथा himakshi अन्त्य नाड़ी में उत्पन्न हुई है। अतः दोनों की नाड़ी अलग अलग होने के कारण इन पर नाड़ी दोष का प्रभाव नहीं होगा फलतः शारीरिक रूप से दोनों सामान्यतया स्वस्थ ही रहेंगे परन्तु himakshi के स्वास्थ्य पर मंगल का अशुभ प्रभाव होगा जिससे वे रक्त या पित संबंधी परेशानी प्राप्त करेंगी तथा यदा कदा हृदय संबंधी कष्ट भी हो सकता है। साथ ही गुप्त रोग या मासिक धर्म संबंधी असुविधा भी समय समय पर होती रहेगी। himakshi सुख के क्षणों में भी यदा कदा उदासीनता के भाव का प्रदर्शन करेंगी जिससे परस्पर संबंधों में तनाव का भाव विद्यमान होगा। अतः मंगल के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए himakshi को नियमित रूप से हनुमानजी की पूजा करनी चाहिए तथा मंगलवार के उपवास भी सम्पन्न करने चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से दर्पीदज और himakshi का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त दर्पीदज और himakshi के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में himakshi के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन himakshi को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में himakshi को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से दर्पीदज और himakshi सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार दर्पीदज और himakshi का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

himakshi के अपने सास से सामान्यतया अच्छे संबध रहेंगे तथा सास भी उसके विनम्र स्वभाव, मधुरवाणी तथा गृहणी के रूप में उससे पूर्ण प्रभावित तथा प्रसन्न रहेंगी। himakshi भी अपनी सास को माता के समान व्यवहार एवं सम्मान प्रदान करेंगी तथा किसी भी गम्भीर

समस्या का परस्पर सामंजस्य से समाधान करने में समर्थ रहेंगी।

साथ ही उसके ससुर भी उनकी सेवा तथा आदर के भाव से प्रसन्न रहेंगे तथा himakshi भी अपनी ओर से उनकी सेवा सुश्रूषा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। लेकिन देवर एवं ननदों से उन्हें यथोचित सम्मान तथा सहयोग नहीं मिलेगा तथा इनकी प्रतिद्वन्दिता का भाव परस्पर दूरी बनाए रखेगा।

इसके अतिरिक्त सास ससुर का himakshi को ससुराल में पूर्ण स्नेह तथा सहयोग प्राप्त होगा तथा वे सच्चे मन से उसे अपने परिवार में स्वीकार करेंगे।

ससुराल-श्री

दर्पीदज के अपने सास ससुर से संबध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे तथा परस्पर तनाव तथा मतभेद बने रहेंगे जिसका मुख्य कारण इन के मध्य आयु का अधिक अंतर रहेगा। इससे इनके मध्य सैद्धांतिक तथा वैचारिक मतभेद सामान्य रूप से विद्यमान रहेंगे। लेकिन यदि दर्पीदज तथा उनके सास ससुर परस्पर सामंजस्य को स्थापित करके व्यवहार करें तो उपरोक्त मतभेदों तथा समस्याओं में काफी न्यूनता हो सकती है।

साथ ही साले एवं सालियों से भी कई क्षेत्रों में असहमति रहेगी तथा संबध विशेष मधुर नहीं रहेंगे फलतः आपस में स्नेह सहयोग एवं सहानुभूति के भाव की न्यूनता रहेगी। अतः इन्हें चाहिए कि बुद्धिमता एवं सामंजस्य युक्त प्रवृति से मतभेदों तथा समस्याओं का समाधान करें तथा मित्रता का भाव भी रखें। इससे उपरोक्त मतभेदों में अल्पता आएगी तथा मधुर संबधों में वृद्धि भी होगी।

इस प्रकार सामान्य रूप से दर्पीदज के ससुराल वालों का दृष्टिकोण उनके प्रति अपेक्षित नहीं रहेगा। अतः उन्हें चाहिए कि दामाद के प्रति अपने दृष्टिकोण को विनम्र तथा सहयोग के भाव से युक्त बनाएं।